सखी ! सब, ह्वै गये लालहिं लाल ।
ऐसो रंग चल्यो पिचकारिन, ऐसो उड़यो गुलाल ।
लाली लाल, लाल भये लालहुँ, लाल भईं ब्रजबाल ।
तरुवर लाल, लाल भये सरवर, शुक, पिक लाल मराल ।
धेनु लाल ब्रजरेनु, लाल भइ, लाल भये सब ग्वाल ।
बाहर लाल 'कृपालु' फाग को, भीतर लाल गुपाल ॥

भावार्थ-

एक सखी वृन्दाबन की होली के दृश्य का वर्णन करती हुई अपनी अन्तरंग सखी से कहती है कि अरी सखी ! युगल सरकार की होली में पिचकारीयों से ऐसा रंग चला और ऐसा गुलाल उड़ा कि जड़ चेतन सब लाल हो गये । श्यामसुन्दर लाल हो गये, किशोरी जी भी लाल हो गयीं और ब्रजबालायें भी लाल हो गयीं तथा समस्त वृक्ष और सरोवर भी लाल हो गये । तोते, कोयल एवं हंस आदि भी लाल हो गये । समस्त गायें एवं ब्रज की धूलि भी लाल हो गयीं एवं समस्त ग्वाल बाल भी लाल हो गये । '**कृपालु**' कहते हैं कि बाहर तो फाग सम्बन्धी गुलाल आदि के रंग से लाल हो उठे हैं एवं आंतरिक रूप से सब लोग श्यामसुन्दर के अनुराग में रंजित हैं ।

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिषत्